Training on sustainable harvesting/ collection of *Terminaliachebula* (Harra) fruits in Madhya Pradesh

Four training programmes on sustainable harvesting/ collection of *Terminaliachebula* (Harra) fruits were conducted in Tamia, Chhindi and Bataka ranges of Chhindwara Forest Divisions (West & East) and Gopalganj range of Seoni Forest Division (North) in Madhya Pradesh on 22nd, 23rd, 24th and 25th October, 2018 respectively in continuation of the training programmes earlier conducted in Mandla (West) and Katni Forest Divisions. These training programmes have been financed by TRIFED, a national-level apex organization functioning under Ministryof TribalAffairs, Govt. of India. The target groups for these trainings are mainly NTFP collectors, SHGs and people of concerned district unions. More than 60 Harra collectors along with forest officials participated in each training programme. Among the officers, Dr. Kiran Bisen, DFO, Chhindwara (West), Dr. Anil Kumar, Certification officer, MFP-federation, Bhopal (M.P.), ACF, SDOsand Dr. Vishakha Kumbhare, Scientist-D of FRC-SD, Chhindwara were present during the training programme at Tamia. Dr. Kumar explained about the MSPs of NTFPs and concept of 'Apni Dukan' and advised to the participants to collect the quality produce so that their produce can fetch better price in the market. Dr. Hari Om Saxena, Scientist-D of TFRI delivered the lectures on sustainable harvesting/ collection, processing and storage of Harra fruits and provided on-site demonstration to the participants who during the feedback session praised the efforts of organizers to explain the techniques of harvesting and processing in a very simple and layman's language. These techniques will help them in maintaining the quality of the Harra fruits and sustainability of the forests as well. The trainings were organized under the guidance of Dr. Nanita Berry, Scientist-E, Head, SFM Division and Nodal Officer of the training programmes. Dr. S. Saravanan, Scientist-E and Shri S.K. Choubey, Technical Officer provided his all valuable support during the trainings. Dr. Vishakha Kumbhare, Scientist-D of FRC-SD, Chhindwara proposed the vote of thanks.

October 25, 2018

Glimpses of the training at Tamia, Chhindwara (West)

Glimpses of the training at Chhindi, Chhindwara (West)

Glimpses of the training at Batka, Chhindwara (East)

Glimpses of the training at Gopalganj, Seoni (North)

Media Coverage

दैनिक भास्कर | सौंसर. पांढुर्ना. बिछुआ. परासिया. जुन्नारदेव. तामिया. दमुआ. अमरवाड़ा. चौरई | छिंदवाड़ा. मंगलवार, 23 अक्टूबर, 2018 | 16

टीएफआरआई के वैज्ञानिकों ने ग्रामीणों को दिया हर्रा लाख संग्रहण का प्रशिक्षण

भास्कर न्यूज | तामिया

आदीवासी बाहुल्य विकासखंड में वनोपज पर निर्भर समुदाय को प्रशिक्षित करने उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान केंद्र जबलपुर के वैज्ञानिकों ने एक दिवसीय प्रशिक्षण में वनोपज संग्राहकों को हर्रा लाख संग्रहण की तकनीक से अवगत कराते हुए वनोपज का सही मूल्य मिलने की जानकारी दी।

टाइफेड द्वारा पोषित एमएफपी एमएसपी योजना के तहत लघु वनोपज के संवहनीय विदोहन पर प्रशिक्षण का आयोजन मप्र लघुवनोपज संघ भोपाल ने उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर के तकनीकी सहयोग से स्थानीय सामुदायिक भवन में किया गया। इस एक दिवसीय प्रशिक्षण में ग्रामीणों को हर्रा लाख संग्रहण करने के तरीके बताए। टीएफआरई की वैज्ञानिक डॉ. नानिता बेरी ने लाख तथा डॉ. हरिओम सक्सेना ने हर्रा संग्रहण की जानकारी दी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में पश्चिम वन मंडल की डीएफओ डॉ. किरण बिसेन लघुवनोपज संघ के डॉ. अनिल कुमार, टीएफआर आई के डॉ. सरनम, डॉ.

विशाखा, एसके चौबे, लघुवनोपज संघ के एसडीओ अनादि बुधौलिया प्रोबेशन आईएफएस अमित निकम, प्रोबेशन एसीएफ राहुल रघुवंशी, अतुल पारधी, तामिया रेंजर आरपी श्रीवास्तव सहित समस्त स्टाफ ग्रामीण मौजूद रहे। प्रशिक्षण में उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान जबलपुर की वैज्ञानिक एंव वन प्रबंधन कृषि वानिकी की प्रभागाध्यक्ष डॉ. नेनिता बेरी ने ग्रामीणों को सबसे पहले जंगल बचाने का संकल्प दिलाया। उन्होंने कहा पशुओं के लिए चारा और जलाऊ लकड़ी के साथ अपना काम चलाकर जंगल बचा सकते है। डॉ. ननिता बेरी ने लाख लेलीफेरा लक्का के संवहनी विदोहन के एक दिवसीय प्रशिक्षण ग्रामीणों को एग्रो लाख कल्चर के साथ खेती करने लगाने का समय देखरेख उचित मूल्य के साथ सामूहिक रूप से उत्पादन करने की जानकारी दी।

टीएफआरई जबलपुर के वनोपज रसायन के वैज्ञानिक डॉ. हरिओम सक्सेना ने औषधीय गुणों से भरपूर हर्रा टर्मीनेलिया चेबुला के संग्रहण की तकनीक की जानकारी वनोपज संग्राहकों को दी। उन्होंने कहा कि सही तरीके से संग्रहण करने पर ग्रामीणों को सही दाम मिल सकेगा। गौरतलब है कि तामिया का हर्रा कई आयुर्वेद उत्पाद बनाने वाली कंपनियों को भेजा जाता है। इस कार्यक्रम में डीएफओ डॉ. किरण बिसेन ने बताया कि हर्रा संग्रहण करने वाले ग्रामीणों से इसकी खरीदी के लिए केन्द्र सरकार ने इस वर्ष न्यूनतम संग्रहण मूल्य 11 रुपए प्रति किलो अर्थात ग्यारह सौ रुपए प्रति क्विंटल घोषित किया है। इस न्यूनतम समर्थन मूल्य पर राज्य सरकार ने हर्रा खरीदी का कार्य पिछले वर्षों की तरह इस बार भी प्राथमिक वनोपज सहकारी समितियों के माध्यम से कराने का निर्णय लिया गया है। वनोपज संग्राहक अब वन विभाग के बंधन केंद्र में अपनी वनोपज बेच सकेंगे। लघुवनोपज संघ के डॉ. अनिल कुमार ने भी संगाहकों से सवालों का समाधान कर जवाब दिया। इस दौरान डिप्टी रेंजर मनोज पवार, मारूति धुर्वे, सीताराम कतिया, एनके तिवारी, वनरक्षक जागेश्वर भलावी, संजय धुर्वे, अनिल परतेती, वन विभागीय अमला सहित अनेकों संग्राहक मौजूद रहे।

14 नवदुनिया | छिंदवाड़ा सिटी | www.naidunia.com

हर्रा व लाख संग्रहण के तरीके बताए

तामिया। नवदुनिया न्यूज

आदीवासी बाहुल्य विकासखंड मे वनोपज पर निर्भर समुदाय को प्रशिक्षित करने उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान केंद्र जबलपुर के वैज्ञानिकों ने एक दिवसीय प्रशिक्षण में वनोपज संग्राहकों को हर्रा लाख संग्रहण की तकनीक से अवगत कराते हुये वनोपज का सही मूल्य मिलने की जानकारी दी। टाईफेड द्वारा पोषित एमएफपी एमएसपी योजना के तहत लघु वनोपज के संवहनीय विदोहन पर प्रशिक्षण का आयोजन म.प्र. लघुवनोपज संघ भोपाल ने उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर के तकनीकी सहयोग से स्थानीय सामुदायिक भवन में किया गया।

प्रशिक्षण में ग्रामीणों को हर्रा लाख संग्रहण करने के तरीके बताए। टीएफआरई की वैज्ञानिक डॉ नानिता बेरी ने लाख तथा डॉ हरिओम सक्सेना ने हर्रा संग्रहण की जानकारी दी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में पश्चिम वन मंडल की डीएफओ डॉ किरण बिसेन लघुवनोपज संघ के डॉ अनिल कुमार, टीएफआर आई के डॉ सरनम, डॉ विशाखा, एसके

हर्रा लाख संग्रहण के लिए टीएफआरई के वैज्ञानिकों ने दिया प्रशिक्षण।

चौबे, लघुवनोपज संघ के एसडीओ अनादि बुधौलिया प्रोबेशन आईएफएस अमित निकम, प्रोबेशन एसीएफ राहुल रघुवंशी, अतुल पारधी, तामिया रेंजर आरपी श्रीवास्तव सहित समस्त स्टाफ ग्रामीण मौजूद रहे।

उष्ण कटिबंधीय वन अनुसंधान जबलपुर की वैज्ञानिक एंव वन प्रबंधन कृषि वानिकी की प्रभागाध्यक्ष डॉ नेनिता बेरी ने ग्रामीणों को सबसे पहले जंगल बचाने का संकल्प दिलाया। उन्होंने कहा पशुओं के लिये चारा और जलाऊ लकडी के साथ अपना काम चलाकर जंगल बचा सकते हैं। डॉ ननिता बेरी ने लाख लेलीफेरा लक्का के संवहनी विदोहन के एक दिवसीय प्रशिक्षण ग्रामीणों को एग्री लाख कल्चर के साथ खेती करने लगाने का समय देखरेख उचित मूल्य के साथ सामूहिक रूप से उत्पादन करने की जानकारी दी। टीएफआरई जबलपुर के वनोपकरसायन के वैज्ञानिक डॉ.हरिओम सक्सेना ने औषधीय गुणो से भरपुर हर्रा टर्मीनेलिया चेबुला के संग्रहण की तकनीक की जानकारी वनोपज संग्राहको को दी = उन्होने कहा कि सही तरिके से संग्रहण करने पर ग्रामीणो को सही दाम मिल सकेगा गौरतलब है कि तामिया का हर्रा कई आयुर्वेद उत्पाद बनाने वाली कंपनियो को भेजा जाता है। इस कार्यक्रम मे डीएफओ डॉ.किरण बिसेन ने वताया कि हर्रा संग्रहण करने वाले ग्रामीणों से इसकी खरीदी के लिए केन्द्र सरकार ने इस वर्ष न्यूनतम संग्रहण मूल्य 11 रुपए प्रति किलो अर्थात ग्यारह सौ रूपए प्रति क्विंटल घोषित किया है। इस न्यूनतम समर्थन मूल्य पर राज्य सरकार ने हर्रा खरीदी का कार्य पिछले वर्षों की तरह इस बार भी प्राथमिक वनोपज सहकारी समितियों के माध्यम से कराने का निर्णय लिया गया है। वनोपज संग्राहक अब वन विभाग के बंधन केंद्र मे अपनी वनोपज बेच सकेंगे। लघुवनोपज संघ के डॉ अनिल कुमार ने भी संगाहको से सवालो का समाधान कर जवाब दिया। इस दौरान डिप्टी रेंजर मनोज पवार, मारूति धुर्वे सीताराम कतिया एनके तिवारी, वनरक्षक जागेश्वर भलावी, संजय धुर्वे, अनिल परतेती, वन विभागीय अमला संग्राहक मौजूद रहा। टीएफआरआई द्वारा संग्राहकों को कपडे के थैले वितरित बांटे।

बहुप्रसारित हिन्दी सांध्य दैनिक

सिवनी लोकवाणी

गुरूवार 25 अक्टूबर 2018 [अंक : 29, पृष्ठ : 04, वर्ष : 14, मूल्य : 01 रूपये]

हर्रा औषधि उत्पादन को लेकर वन विभाग ने दिया प्रशिक्षण

सिवनी (लोकवाणी)। जिले के दक्षिण सामान्य वनमंडल अंतर्गत आने वाले वन परिक्षेत्र सिवनी की खापा बीट में आज वन सवर्धन के लिए प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस आयोजन में प्रबंधन प्रभाग जबलपुर के डॉ. हरिओम सक्सेना, संतोष चौबे तकनीकी अधिकारी व सिवनी परिक्षेत्र के वन परिक्षेत्र अधिकारी के.के.तिवारी सहित अन्य कर्मचारी उपस्थित रहे।

प्रशिक्षण के दौरान उपस्थितजनों द्वारा हर्रा औषधि के उत्पादन कैसे बढ़ाया जा सकता है यह उपस्थित ग्रामीणों को बताया गया तथा आज आयोजित प्रशिक्षण में उन्हें जागरूक भी किया गया।